कृतज्ञता

'कृतज्ञता' शब्द बना है 'कृत' 'ज्ञ् और 'तल्' अर्थात् – किए हुए को जानने वाला यह इतना महत्वपूर्ण शब्द है कि इसको जानने वाला। और मानने वाला व्यक्ति सदैव सुखी रहता है। उसको किसी से कोई शिकायत नहीं रहती। कृतज्ञ व्यक्ति सदैव दूसरों का आभारी रहता है चाहे उसे सुख मिले अथवा दुःख वह दोनों परिस्थितियों में समान भाव से रहता है।

इससे सम्बन्धित एक कहानी है। एक बार एक किसान था वह हमेशा भगवान् को धन्यवाद देता था।सुबह शाम हर समय भगवान् के प्रति कृतज्ञ रहकर धन्यवादी होता था। एक बार गाँव में वर्षा न होने के कारण सूखा पड़ गया तब वहाँ के लोगों ने सोचा कि अब देखतें हैं कि यह किसान क्या कहेगा? इस पर किसान ने फिर भगवान् को धन्यवाद दिया और कहा कि हे भगवान् तेरा धन्यवाद जो तूने ऐसा समय बार – बार नहीं दिया केवल थोड़े ही समय के लिए तो ऐसा हुआ है। उसकी इस बात पर सभी व्यक्ति हैरान हो गए।

यह होती है कृतज्ञता। कहा भी गया है –

कृतज्ञता समस्त गुणों की जननी है।

डा0 निशि त्रिखा

प्र0 स्ना0 अ0 (संस्कृत)
वायु सेना उ0 मा0 विद्यालय
रेस कोर्स, नई दिल्ली